॥ श्रीः ॥

दुर्जनकरिपंचानन ।

श्रीमत्स्वामी आचार्य्यवर्य्य सर्व्वपूज्य
श्रीरंगाचारी रीवां निवासी
विरचित ।

खेमराज श्रीकृष्णदासने
बम्बई.
खेतवाडी ७ वीं गली खम्बाटा लेन
निज "श्रीवेङ्कटेश्वर" स्टीम्-मुद्रणयन्त्रालयमें
मुद्रितकर प्रकट किया.

संवत् १९६८, शके १८३३.

श्रीः

अथ दुर्जनकरिपञ्चानन ।

श्रीमते रामानुजाय नमः ॥

भेदाऽभेदादिनानाविधकुमतिमतैः कण्टकैर्गत्यनर्हं पन्थानं प्राक्तनं यो ऽकृत सुगमतरं युक्तिसंमार्ज्जनीभिः । श्रीमान्रामानुजार्यः स जयतिनितरां दर्शयन्वर्त्म मुक्तेर्यन्नामश्रावमात्रात्कुदृश उरुभियाऽद्यापि लीना भवन्ति ॥ १ ॥ चक्रंशंखश्चविष्णोर्दनुसुतदलने जाग्रतीविश्रुतेये तच्चिह्नैर्भासुरांगानवनिदिविषदो वैदिकाचारनिष्ठान् । दुस्तर्काऽक्षोभ्यपक्षान् बहुकुमतिमदध्वान्तविध्वंसनार्कान्दृष्ट्वा धावन्ति दूरे हरिमिव दितिजा वैष्णवान्विद्विषन्तः ॥ २ ॥

जयपुर राजाके पास में रहने वाला लक्ष्मण-

गिरी अतिथि रामानुजादि चारों वैष्णव मत पर चौंसठ ६४ प्रश्न करिके जहां तहां वैष्णवन्हके पास भेजा सो पत्र श्रीवृंदावनके रहने वाले स्वामी रंगाचारी जीके पास आया सो स्वामी देख करि उसका सबका उत्तर विस्तार करिके दिया सो ग्रन्थ संस्कृत में है सबके जानने लायक नहीं है इससे भाषासे उसका अर्थ संक्षेप करि श्रीरंगाचारी स्वामी रीवां के लिखते हैं सबके जानने वास्ते के जिसको विस्तार करि देखना होवै सो संकृत का ग्रंथ देखे उसका पहिला–

॥१॥प्रश्न-यह है संप्रदाय शब्द का क्या अर्थ है इसका यह तात्पर्य है आचारी लोग अपनेको संप्रदायी मानके औरको असंप्रदायी जान निंदा करतेहैं येहीते संप्रदाय शब्द का अर्थ पूछाहै (उत्तर) पहिले पहिल आचारी लोगोंने अपने अपने शिष्यनकों जौन जौन अर्थका उपदेश किया है

सो सो अर्थ संप्रदाय शब्दका अर्थ है आचारी लोग सबको असंप्रदायी नहीं कहते हैं परंतु अपने को जो संप्रदायी कहते हैं उसका यह अभिप्राय है सामान्य विशेष न्याय करिकै अपने को सत्संप्रदायनिष्ठ कहतेहैं काहेसे वेद शास्त्र के संमत मोक्षका साधन अनादि सिद्ध सब प्रमाणते अविरुद्ध है विष्णु का मोक्षप्रदत्व में कोई का विवाद नहीं है ओही विष्णु को मोक्षोपाय मानिकै उपासनादि करते हैं जिनने प्रश्न किया उनके मत में भी जो दंडी हैं सोभी नारायण की उपासना करते हैं येही लिये वैष्णव संप्रदाय सत् संप्रदाय कहावै है येही ते आचारी लोग अपनेको संप्रदायी कहते हैं औरकी निंदा नहीं करते ॥

॥२॥प्रश्न–तुम्हारा संप्रदाय कौने प्रयोजन के वास्ते है (उत्तर) संसार में जो कोऊ जौने संप्र-

दाय का अंगीकार करता है सो सब मोक्षके लिये परंतु सो संप्रदाय से मोक्ष होता है कि नहीं सो बात और है परंतु हमारा जौन वैष्णव संप्रदायहै मोक्षके वास्ते काहे ते विष्णुका मोक्ष प्रदत्व में सब आस्तिकन का संमत है उनके उपासना के संप्रदाय से मोक्ष होने में कुछ संदेह नहीं है जो शास्त्र सत्य कहते होंय ॥

॥३॥प्रश्न–कौने भेद से संमत है (उत्तर)तुम अपने मतसे वैष्णव संप्रदाय में जौने जौने अर्थ सों भेद मानते हौ तौने तौने भेद करिकै भिन्न है परंतु वह सब भेद शास्त्रसंमत अविरुद्ध है जिसको जौने में रुचि होय सो ग्रहण करै ॥

॥ ४ ॥ प्रश्न–और सब संप्रदाय में तुम्हारी संमति है कि नहीं (उत्तर) वेद शास्त्र संमत जौन जौन में है तिनमें संमत हैं और में नहीं ॥

॥५॥प्रश्न–उनमें सबमें संमत होय तौ क्यों

नहीं आचरण करते हो जो नहीं संमत है तो क्या मानते हो (उत्तर) वेदशास्त्र प्रमाण सिद्धत्व करिकै सब प्रामाणिक है सो जिसमें जिसका रुचि और अधिकार होय सो आचरण करते हैं और मतन का आचरण नहीं करने से सो अप्रमाणिक नहीं होता दो अर्थ शास्त्र सिद्ध होय उसमें अपने रुचि करि व्यवस्था शास्त्रकार किया है अरु सन्यासी यज्ञादि कर्मका आचरण नहीं करते हैं तो क्या उनके न किये से यज्ञादि कर्म अप्रमाण हैं सो नहीं सन्यासीको अधिकार नहीं है अधिकार करिकै व्यवस्था शास्त्र में कही है ताते जो वेदशास्त्रसिद्ध मत है सो प्रमाणिक मानते हैं अपने रुचि अधिकार मुवाफिक कोई मत का आचरण करै ॥

॥ ६ ॥ प्रश्न—तुम्हारा संप्रदाय क्या वर्णनिष्ठ है वर्णनिष्ठ होय तो संप्रदाय पूर्वक वर्ण अथवा वर्णपूर्वक संप्रदाय ये प्रश्न कुछ काम का नहीं है

शास्त्रके जाननेवाले ऐसे प्रश्न नहीं करते तौभी उत्तर देते हैं (उत्तर) आचारी जो शिष्यनको उपदेश करै सो अर्थ संप्रदाय कहावै वे चारों जाति वर्ण कहावैं ये वर्ण और संप्रदायका संबंध नहीं है एक सें एक नहीं टिकता है जो वर्णवाले जनन का यह तुम्हारे संप्रदाय क्या लेने लायक है ऐसा अभिप्राय कहो तो सब वर्णवालेका यथा अधिकार यथारुचि लेने लायक है सबका भगवान् शरण है यह श्रुति में लिखा है अरु जो पूछा कि संप्रदाय पूर्वक वर्ण की वर्ण पूर्वक संप्रदाय है ये प्रश्नका क्या अर्थ है संप्रदाय से वर्ण पैदा भया अथवा वर्णसे संप्रदाय पैदा भया ये अर्थ अत्यन्त असंगत है काहे तें वर्णभी परंपरा से अनादिहै संप्रदाय भी अनादि है एक से एक नहीं हो सकता तुम भी जौन संप्रदाय मानते हौ उसमें पूछे कि,

वर्ण से संप्रदाय है कि संप्रदाय से वर्ण है तौ क्या उत्तर देवोगे जो उत्तर देवोगे सो हमाराभी है अरु वर्ण वाले का यज्ञादि कर्म मानते हौ सो वर्ण से यज्ञादि कर्म है कि यज्ञादि कर्म से वर्ण है इसका क्या उत्तर है वर्ण अरु संप्रदाय में एकसे एक पैदा होनेका अभिप्राय सो नहीं पूँछता हूं पहिले वर्ण है कि पहिले संप्रदाय है यह पूछता हौं जो ऐसे कहो तौ इसका उत्तर दे चुके हैं दूनो अनादि चले आए हैं किसको पहिले किसको पाछे कहैं पहिले यज्ञादि कर्म हैं कि वर्ण हैं जो इसका उत्तर सो यहां भी है जो कहौ यज्ञादिकन के साथ प्रजनका निर्माण किया गुण कर्म वेद करिकै चारों वर्ण का ईश्वर ने निर्माण किया ऐसे कहनेवाला भारतादिक वचन से दोनों को साथ ही निर्माणकर दिया ऐसा कहो सो उत्तर हमको कहने का हमारा मुख बंद नहीं है

॥७॥प्रश्न–जो तुम्हारा संप्रदाय आश्रमनिष्ठ होय तो संप्रदाय पूर्वक आश्रम है कि आश्रमपूर्वक संप्रदाय है (उत्तर) इसका उत्तर जो सातवां प्रश्न का उत्तर है सो इसका भी है जो वर्णसरीखा आश्रम भी चला आवता है दूनों बराबर है ॥

ये आठ तरह का जो पहिला प्रश्न है तिसका उत्तर दे चुके हैं ॥

अब दूसरे प्रश्न का उत्तर देते हैं ॥

॥१॥प्रश्न–तुम्हारा संप्रदाय बहुत काल से चला आताहै कि थोड़ेकालसेहै जो बहुत कालसेहै तो मनुस्मृति इत्यादिक ग्रंथन्हमों क्यों नहीं कहा ताते मनुने जो कहा तिससे तुम्हारा संप्रदाय भिन्न होने से प्रमाण नहीं है (उत्तर) यह जो तुमने पूँछा कि बहुत काल से तुम्हारा संप्रदाय चला आवता है कि थोड़े काल से तौ यह तुम्हारा पूँछना तौ नहीं बना काहेते मनु अरु ऋष्यादि

तीनों काल के जानने वाले हैं सो भविष्यत जो आगे होनेवाली बात है सोभी अपने अपने ग्रंथन में कहे चले आवतहैंसो तुम्हें तो पूँछना इतना रहा कि मन्वादिकमें नहीं है तो तुम्हारा संप्रदाय अप्रमाणिक है तुम अधिक पूछा है तोभी हम उत्तर देते हैं हमारा मत अनादिकालसे चला आवे है मन्वादिक जानते भी हैं परंतु वे अपने ग्रंथमों नहीं कहे ताते अप्रमाण नहीं जानना वह लोक सामान्य धर्म कहनेको प्रवृत्त हैं विशेष धर्म कहनेको नहीं प्रवृत्त हैं पहिले थोड़ा हमारा मत भी कहा है नारायण अरु नारायणके शरीरभूत माया इत्यादिक कहा है मनुके टीका करनेवाले-नेभी कहा है ये मत त्रिदंड वेदांतीका है जो कहो मनुनें नहीं कहा कैसे प्रमाण होयगा सो मनुने तौ पतिव्रता सती होनको नहीं कहा सो सती होत हैं तो क्या अप्रमाण हैं जो मनुने सती होने

नहीं कहा याज्ञवल्क्यादिक प्रमाणसे मानोगे तो इसीतरह हमारा मतभी प्रमाण है और और ग्रंथनमों हमारा मत कहा है और ऊर्ध्वपुंड्र तिर्यक्पुंड्र तुलसी पद्माक्ष रुद्राक्ष भस्म श्वेत मृत्तिका एक दंड त्रिदंड यह सब धारण मनुने नहीं कहा सो सो संप्रदायी अंगीकार भी करते हैं आचरण भी करते हैं सो क्या अप्रमाण है जो यह कहौ मनुने नहीं कहा और धर्मशास्त्रमें कहा हैं तौ हमारे भी संप्रदाय वसिष्ठ हारीत सनकादिकनके धर्मशास्त्रमों कहा है मन्वादिकनने निषेध नहीं किया ताते हमारा संप्रदाय प्रमाण है जो कहो वसिष्ठ हारीतकन्हनके धर्मशास्त्र और है तुम अपने मतके धर्म शास्त्र बनायके उनके नाम धरि दिये हौ तौ हम ऐसा पूछेंगे जो हमारे मतके धर्मशास्त्र वसिष्ठादिक बनाया अरु और मतके धर्म शास्त्र बनायके उन्हके नाम धरि दिया

तौ इसका उत्तर क्या देवोगे अरु वशिष्ठ दूनों मतके धर्मशास्त्र बनाये हैं हमारे मतका बनाया अरु औरो मतनको बनाया इसमें कुछ विरोध नहीं है तुह्मारा मत और धर्मशास्त्रके विरुद्ध होनेसे अप्रमाण है जो ये कहोगे तौ जैमिनिने पूर्वमीमांसामों ब्रह्म अरु ब्रह्मका उपासना देवता यह सब नहीं माना व्यासजीने उत्तर मीमांसामें माने हैं ताते पूर्वमीमांसाके विरुद्ध उत्तर मीमांसा क्या अप्रमाण है तो व्यासजी यथार्थ वक्ता कैसे न होहिंगे और रजीपुत्रके मोहनकरनेके लिये बृहस्पति चार्वाक मतः बनाये औरभी धर्मशास्त्र बनाया तो क्या चारवाकमतसे विरुद्ध होनेसे उनके बनाये और धर्मशास्त्र अप्रमाण होंयगे कि उनने नहीं बनाया ओर कोइ बनायेहैं ताते मनुने कहा तौ मनुने निषेध भी नहीं किया ताते

और धर्मशास्त्रनके मतसे हमारा मत प्रमाण है अनादिसे चला आया है ॥

॥२॥प्रश्न-जो थोडे कालसे तुह्मारा संप्रदाय चला आया है सो धर्म निश्चय अरु धर्मके फल के वास्ते नहीं कहोगे तो धर्म का निर्णय और उसका विधान औ धर्मका फल यह सब प्राचीन शास्त्र से होता है यह काहे वास्ते नवीन संप्रदाय चलाया उत्तर हमारा मत थोडे काल से नहीं चला अनादि कालसे चला आया है यह कहि चुके अरु धर्मादिक निर्णय प्राचीन शास्त्रनसे होता है यह नवीन काहे चलाये वह प्राचीन शास्त्र कौन है वेद अरु ऋषिनका ग्रंथ है कि शंकराचार्य्य यादव भास्कर वैद्यनाथादिकनका ग्रंथ है जो वेद अरु ऋषिनका ग्रंथ कहौ तौ इसी ग्रंथनसे धर्मादिक निर्णय होत है तौ शंकराचार्यादिक नवीन अपने मतके ग्रंथ काहे बनाये वेद

ऋषिन के ग्रंथ सूत्रादिकन ते अबके अज्ञानी लोगन्ह के भ्रम संशय छूटि निश्चय होता नहीं ताते अच्छीतरहनिश्चयके वास्ते शंकराचार्यादिकप्रवृत्त भये हैं जो यह कहौ तौ हमारे पूर्व अचार्य भी वेद अरु ऋषिन के ग्रन्थन से अज्ञानी लोगनके अच्छी तरह ज्ञान होनेके वास्ते प्रवृत्त भये हैं जो प्राचीन ग्रन्थ शंकरादिकन्ह को कहो जैसे शंकराचार्य अपने मतके लिए प्रवृत्त भये तैसे हमारे आचार्य भी वेद अरु ऋषिन ने जो कहा है हमारा संप्रदाय उसको अज्ञानी लोगन्ह के जनावनेके वास्ते प्रवृत्त भये हैं कुछ नवीन मत नहीं चलाये हैं जो ग्रंथ बानाने की नवीन रीति कहौ तो ये सब ग्रन्थकारन्ह का है इसमें कछु दोष नहीं जो इसका प्रयोजन पूछो तौ अच्छी तरह अपने मतको जान के उसका आचरण करने से मोक्ष फल होगा ॥

॥३॥प्रश्न–ब्राह्मण से भिन्न जाति आचार्य हो सकता है कि नहीं जो हो सकता है यह बात शास्त्र विरुद्ध है जो नहीं होसकता है तो तुम्हारे संप्रदाय में शठ कोप इतर वर्ण आचार्य कैसे भये ये तीनों प्रश्नका उत्तर ब्राह्मण से और वर्ण भी आचार्य होसकता है यह बात मनुने द्वितीयाऽध्याय में कहा है उसकी व्याख्या करनेवाले भी कहा है कोई पूर्वज्ञानी होयके कौनो प्रारब्ध वश नीच जन्म पाये तौ भी उनसे मोक्षका उपाय ज्ञान लेनेमों दोष नहीं यह बात भारतमोक्षधर्ममें भी कहा है कि ब्राह्मण अरु क्षत्रियअरु वैश्य अरु शूद्र ओ इनसे भी नीच होय तो उससे ज्ञान लेनेमों दोष नहीं तैसे ओही भारतमें कौशिक कथामें भी कौशिक नामा कोई ब्राह्मण तपस्वी मिथिला में जायके धर्मव्याध कसाईसे ज्ञानोपदेश लिया तैसे नैमिषारण्यमें शौनकादिक

ब्राह्मण सूतजीसे धर्म श्रवण किये इन प्रमाणन से ब्राह्मणते और जातिभी ज्ञान उपदेष्टा हो सकते हैं ब्राह्मणके सिवाय दूसरी जात आचार्य नहीं हो सकते यह कहाहै तिसका यह अभिप्राय है किजो पूर्वजन्ममें ज्ञानी होके कोई प्रारब्धवश नीचजाति पावै तौ ओ आचार्य हो सकताहै और दूसरा नहीं हो सकता जो पूछे हो कि तुम्हारे मतमें शठकोप आचार्य भए हैं सो उसका उत्तर सो नित्यमुक्त लोकरक्षाके लिये अवतार लिये हैं सो योगिनसे भी अधिक हैं जो धर्मव्याधादिकसाई आचार्य भये तब शठकोपको आचार्य होने में क्या संदेह है ब्राह्मण सिवाय दूसरा जाति आचार्य नहीं होता है यह वचनका धर्मव्याधादिके विषे जैसा संकोच करते हो तैसे उनसे भी अधिक शठकोप हैं उनसेभी संकोच करनाचाही ऐसे महात्मा

व्यक्ति विशेष छांडिके सामान्य ब्राह्मण इतर वर्णआचार्य नहीं हो सकता है ॥

॥६॥प्रश्न–शूद्रसे उपदेश लेके कल्याणभागी कैसे होगे (उत्तर) जैसे कौशिकादि धर्मव्याधासे उपदेश लेके कल्याण भागी भये तैसे जानो ॥

॥७॥प्रश्न–जो शूद्रसे उपदेश लेके कल्याण-भागी होगे तो ब्राह्मणहीसे उपदेश लेना चाही इस शास्त्रकी क्या गति है (उत्तर) धर्मव्याधा-दिकन्हकाभी आचार्यत्व शास्त्रमें कहनेसे उस वचनका संकोच करना सबको चाही ॥ ८ ॥

इसी तरहसे दूसरे आठ प्रश्नका उत्तर देचुके ॥

अब तीसरे प्रश्नका उत्तर देते हैं ॥

॥१॥ प्रश्न–तुम्हारे उपदेश लेनेवाले चारों वर्ण हैं या तीन हैं या दो हैं या एक है (उत्तर) चारो वर्णभी यथायोग्य हमारे उपदेशके लेने वाले हैं परन्तु जो वेदके अधिकारी हैं उनको

वैदिक मंत्र देते हैं जो वेदके अधिकारी नहीं हैं उनको तांत्रिक मंत्र देते हैं जो पूछो तीनों वर्ण द्विजाति हैं उनके गर्भाधानादि उपनयन पर्यन्त संस्कार करिके सावित्री ग्रहण मुख्य है क्योंकि बिना द्विजातित्व के व्रात्यत्व होने से ऐसा तुम्हारा उपदेश लेने से भी क्या होगा(उत्तर)गर्भाधानादिउपनयन पर्यन्तसंस्कार सावित्रीग्रहणते व्रात्यत्व जो होता है सो हमारे उपदेश से मिटता है यह तो नहीं कहते हैं शास्त्र में जो संस्कार कहा है सोभी द्विजातित्वके वास्ते ऊँचाही है सो संस्कार बिना जैसे द्विजातित्व नहीं है तैसे हमारे संप्रदायके उपदेश बिना उसका जो फल है सोभी न होगा॥

॥ २ ॥ प्रश्न-जो तुम्हारे उपदेश लिये से कुछ होता होय तो सबको तुम्हारा उपदेश नहीं होता है इसते उनके व्रात्यत्व होना चाही यह बात तो

शास्त्र अरु शिष्टों का संमत नहीं है यह न कहो तो विशेष का ग्रहण क्यों नहीं करते(उत्तर) जैसेगर्भा-धानादि संस्कार विना व्रात्य होता है तैसे हमारे वैष्णव संप्रदायके उपदेश विना व्रात्यत्व नहीं होता है परन्तु वैष्णवत्व सिद्धि उसको नहीं है जो पूछो वैष्णवत्व क्या है विष्णु का प्रीतिपात्र होना सो प्रीति पंचरात्रादि वैष्णव धर्मशास्त्र में जो कहा है संस्कार उस संस्कार करिके मंत्र-विशेषोपदेश उसका अर्थ जानना उसको आचरण करनेसे होती है नहीं तो नहीं होती है गर्भाधानादि संस्कारते हीन को व्रात्य मानिके वैदिक जैसे छोड़ते हैं तैसे हम लोग वैष्णव पंच-रात्रादि वैष्णव धर्मशास्त्र में जो कहा है तिससे रहित अवैष्णव मानिके उसको हमारे गोष्ठी मों नहीं लेते उसके समीपमें हम लोग अपने संप्र-दायकी बात नहीं कहते जैसे व्रात्यके समीप

में वेदाध्ययनादि नहीं कर्ते हैं जो कहो कि तुम्हारे मतमें आये बिना उनका स्नान दानादिक व्यर्थ होयगा सो उसका यह उत्तर है जो वैष्णव संस्कार वालेन का स्नान दानादिक से जौन भगवत् प्रीति रूप फल होता है सो फल उन को नहीं होता है इसका औरै फल है कुछ निष्फल नहीं है एक तरहके कर्मफल भेद कैसे जो यह पूछौ जैसा यज्ञादि कर्म स्वर्गादिक में आशा करिके करै तो स्वर्गादिक होता है ओही कर्म फलकी आशा छाँड़िके करै तो ब्रह्म विद्या के द्वारा मोक्षके वास्ते होता है ऐसे जानो यह बात शास्त्रों के अरु शिष्टोंके संमत है तुम्हारे घर का नहीं है येही ते विशेष का अग्रहण बनता है॥

॥३॥ प्रश्न—जैसे वर्णाश्रम धर्मोंका और उनके फलों का वर्णन सब ग्रंथों में है तैसे तुम्हारे संप्रदायका और उसके फलका वर्णन सब ग्रंथोंमें

क्यों नहीं है (उत्तर) वर्णाश्रमधर्मोंका उस फलका वर्णन सब ग्रंथों में है कहत हो तो रामायण मों उत्तर मीमांसा मों औ पूर्व मीमांसा मों कहा है जो उसमें नहीं है तो और ग्रंथ में है जो यह कहो तो हमारे संप्रदाय का वर्णन भी सनकादिक स्मृति में पद्म पुराणादिक में पंचरात्रादिक में किया है मनु ने भी हमारा मत थोड़ा कहा है सो पहिले कहिचुके हैं तुम्हारा सब ग्रंथ देखा नहीं है तिसीसे ऐसी शंका करते हौ तुम्हारा कुछ अपराध नहीं है ॥

॥ ४ ॥ प्रश्न—तुम्हारे आचार्यों से जो पूर्वाचार्य व्यासादिक न्यून रहे कि सम या अधिक (उत्तर) हमारे आचार्यों से व्यासादिक न्यून भी रहे और समभी रहे और अधिकभी रहे जो कहो ये बात विरुद्ध है सो नहीं कोई अंश में न्यून कोई अंश में सम कोई अंश से अधिक सो ये बात आगे खोल देवैंगे ॥

॥९॥प्रश्न—जो न्यूनथे तो उनके कहे बातको क्यों प्रमाण मानते हौ जब सम थे तो उनको गुरू मानके उनके ग्रंथों को क्यों भाष्य कर्ते हो जो अधिक थे तो तुम्हारे आचार्यों में क्या विशेष है (उत्तर) हमारे आचार्यों से व्यासादिक अधिक इसतरह से हैं व्यासादिक अधिकार विशेष में हैं अरु हमारे आचार्य भी अपने संप्रदाय प्रवर्तन करने का मूल भूत पुराण इतिहासादिक बनाये हैं उनीका ग्रंथ देखके हमारे आचार्य अपने संप्रदाय का प्रवर्तन किया है येहीते वह व्यासादिक अधिक हैं अरु सम इस तरह से हैं व्यासादिक जो ग्रंथ बनाये हैं उसका विचार करिकै और युक्ति मिलायके बड़े बड़े ग्रंथ हमारे आचार्य भी बनाये हैं येहीते वह भी अरु येभी सब जानते हैं इसीते हम सब सम मानतेहैं हमारे आचार्य अपनेको उनके बराबर नहीं मानते रहे

ताते उनको गुरू मानिकै उनके ग्रंथका भाष्य बनावे हैं औ न्यून इसतरह से हैं जैसे हमारे आचार्य ग्रंथन करिकै हम लोगनको निःसंदेह ज्ञान अनुष्ठान ताते मोक्ष होनेकी योग्यता भई है तैसे व्यासादिक ग्रंथन से नहीं होती ताते हम लोग अपने आचार्यको अधिक मानते हैं ऐसे व्यासादिक वाक्य अप्रमाण नहीं होतहैं प्रमाण हैं शास्त्र मों अपने गुरू को नारायण सारिखे मानवे को कहा है ॥

॥७॥प्रश्न–जो तुम शूद्र को उपदेश देते हौ सो सच्छूद्रको करते हौ कि असच्छूद्रको करते हौ जो साधारणको करते हौ तौ नीचोंको क्यों नहीं करते(उत्तर)सच्छूद्र औ असच्छूद्र दूनों को उपदेश करते हैं परन्तु चांडालादिकको उपदेश नहीं करते हैं जिनका दर्शन स्पर्शन संभाषण करनेका शास्त्रमें निषेध है तिनको उपदेस कैसे

करैं ताते अत्यन्त नीचन को उपदेश नहीं करते हैं अरु जो पूँछा तुमने सबको उपदेश करते हौ तौ उन्हके वैष्णवत्व करिकै तुल्यता की न्यूनता जो न्यूनता मानो तौ पहिले मतसे इसकी बड़ाई क्या जो तुल्यता मानो तौ उसका किया पाकादिक क्यों नहीं अंगीकार करते हौ (उत्तर) जो हमारे संप्रदायके वैष्णव कौनौं जाति हैं सब वैष्णवत्व करिकै तुल्य हैं पाकादिक अंगीकार नातपाती से होत है वैष्णवत्व से नहीं होत है जैसे ब्राह्मणत्व जाति से सब ब्राह्मण बराबर होय तौ भी क्या सब सबके खाते हैं वैष्णवत्व करिकै तुल्यता याने ब्राह्मण वैष्णव होयतौ सो भगवान् केऊ जैसे प्रीतिपात्र होता है तैसे और वर्ण भी वैष्णव होय तौ तैसेही भगवान्के प्रीति पात्र होय अरु जो तुम हमको उपालंभ किया कि वैष्णव दीक्षासे सर्व वर्ण तुल्य ह्वै जाते हैं सो यह कहने

वाले तुम धन्य हौ सो तुम सत्य कहते हौ उपा-
लंभ नहीं है वैष्णवन्ह को जाति करिके ऊंच
नीच मानिके अनादरआदर नकरै अरु वैष्णवत्व
करिके सबको तुल्य मानिके आदर करै ऐसा न
करै सो नरकभागी होय सो नरक से हम बचि
गए हम लोग धन्य हैं परन्तु लोकमें कोई कोई
चीज कोई कोई आकार करिकै तुल्य रहता है
कौनों कौनो आकार करिके न्यून अधिक भी
रहती है यह साधारण बात तुम्हारे नहीं जान-
नेसे तुम्हारी बुद्धि छोटी नहीं है ब्रह्मांड में भी
नहीं अमावने लायक है हम तुम्हारे बुद्धिकी
बडाई क्या करैं ॥

॥८॥प्रश्न—जो सच्छूद्रही को उपदेश करतेहौ
तौ उसका लक्षण कहना चाहिये(उत्तर)हमलोग
सच्छूद्रही को उपदेश नहीं करते सबको करते हैं
हमें लक्षण कहनेका क्या प्रयोजन है जो सच्छूद्र

का लक्षण न जानते हो तौ मन्वादि ग्रन्थ देखे जानि जावोगे आठ तरह के तीसरे प्रश्न का उत्तर दे चुके ॥

अब चौथे प्रश्नका उत्तर ।

१॥प्रश्न-जो शूद्रकोउपदेशकरतेहौ तौरामकृष्णों के मंत्र समान हैं कि इनमें कोई न्यून कोई अधिक है जो समान कहौ तौ मंत्रांतरका निषेध क्यों करते हौ (उत्तर) भगवत्स्वरूप प्रतिपादक होने से राम कृष्णादि सब मंत्र बराबर हैं व्यापकतादि गुण विशेष का बोधन अबोधन से कमती ज्यादे भी है जो पूंछो समान हैं तौ निषेध क्यों करते हौ (उत्तर) मंत्रार्थ जानना उसका अनुष्ठान करना येही द्वारा अपने प्रयोजनके वास्ते जेतने अर्थ जानना है वह सब अर्थ को कोई मंत्र जनावै है कोई नहीं जनावै है इसके लिये जैसा जैसा अधिकारी होय तैसा तैसा मंत्र ग्रंहण करै ।

॥२॥प्रश्न-उस मंत्रका उपदेश शिष्यनको क्यों नहीं करते हौ(उत्तर)हमारे आचार्य परंपरासे जैसे उपदेश करते चले आये हैं तैसे हमभी उपदेश करते हैं उसका हेतु भी पहिले कहि चुके हैं यह बात मंत्रशास्त्र में भी कही है कि अपने गुरु परंपरा का मर्यादा छोड़ने को नहीं कहा है वह मंत्रन्हके उपदेश का निषेध हमलोग नहीं करते हैं।

॥३॥ प्रश्न-जो न्यून होय तो वह सब मंत्रन्ह का मोक्ष दातृत्व शास्त्र समंत है सो न होना चाहिये (उत्तर) इसका उत्तर कहिचुके मोक्ष वास्ते अनुष्ठानके जितने अर्थ जानना चाहिये तितने अर्थको जनावने वाला मंत्रको हम उपदेश करते हैं और मंत्रका मोक्षप्रदत्व नहीं है सो हम नहीं कहते परंतु हमारे मंत्रका दृष्ट प्रयोजन अधिक है उसका अदृष्ट द्वारा मोक्ष साधनतामें कुछ भेद नहीं है।

॥४॥प्रश्न–और प्रशंसा परता करिके उपपादन करना तो समानही है तुम्हारेमें क्या विशेष है (उत्तर)हम प्रशंसा परता नहीं कहतेहैं सब यथार्थ मोक्ष देनेवाला है हमारा मंत्रका इष्ट प्रयोजन अधिक है सो बारंबार कहि चुके॥

॥५॥प्रश्न–शैव शाक्त मंत्रन्हको मोक्ष प्रदातृत्व है कि नहीं जो होय तो क्यों निंदा करते हो जो नहीं होय तो उसका प्रतिपादक शास्त्रकी क्या गति है यह सबका (उत्तर) शैव शाक्त मंत्रन्हका मोक्ष प्रदातृत्व नहीं है काहेते मंत्र मोक्ष नहीं देता मंत्रके अर्थ जो देवता सो प्रसन्न ह्वैके मोक्ष देते हैं ब्रह्माके दिन गुण प्रधान होता है जौने दिन आरंभमें तमोगुण अधिक भया सो तामस दिन कहावैहै रजोगुण अधिकभयातो राजसदिन सतोगुण अधिक भया तो सात्विक दिन तमोगुणके दिनमें ब्रह्मा जो पुराण बनाये तिसमें तमो-

गुणी देवताकी बड़ाई करी है अरु रजोगुण
दिनमें बनाये हैं तिसमें रजोगुणी देवताकी बड़ाई
करी है सो तामस दिनके पुराणमें अग्नि अरु
शिवकी बड़ाई कही है रजोगुणदिनके पुराणमें
ब्रह्माकी बड़ाई करी है रज तम दूनों गुणके दिन
में सरस्वती आदि देवतन्हकी बड़ाई करी है
सात्विक दिनके पुराण में विष्णुकी बड़ाई है उसी
कालमें मोक्षके उपायसे सिद्ध होयके लोग मुक्त
होते हैं येहीते सात्विक पुराणमें कहे जो सात्विक
विष्णु हैं तिनके माहात्म्य जानिके उनको मंत्र
जपे अरु उनका ध्यान कियेसे मोक्ष होता है
यह मत्स्यपुराणमें कहा है और सत्वगुणसे ज्ञान
होता है रजोगुणते लोभ होता है तमोगुणते
प्रमाद मोह अज्ञान होताहै सो सत्वगुणकेबढावने
वाले नारायण हैं अरु जन्म कालमें जिनको
रुद्र देखे सो तामसी होताहै ब्रह्मा देखे तो राजसी

होय नारायण देखे सो सात्विकीहोय सोई मोक्षके अधिकारी होय यह बात भारतादिकमें कही है और तीनों देवताके बीचमें सत्व तनु जो नारायण हैं उन्हीं सों कल्याण होता है यह बात श्रीभागवतमें कही है ऐसी बातैं अनेक ग्रन्थन्ह मों लिखी हैं मैं कहां तक लिखों ताते सत्व बढायकै उससे मोक्षमें रुचि बढायकै उस समोक्ष शास्त्रमें प्रवृत्त करायकै उसका अर्थ जनायके उस अर्थका आचरण करायकै मोक्ष देनेवाले नारायणके सिवाय दूसर नहीं है और देवतन्ह के जो उपासनादिक कर्ते हैं वह देवता जौने गुणके मालिक हैं वह गुण मुवाफिक अपने उपासकन्ह को फल देतेहैं सो जो वह गुणनसे मोक्ष होता होगा तौ उन्हके भी होगा सो तुम्हीं जानो तुमने पूछा कि और की निंदा क्यों करते

हौ सो चिउँटी पर्यन्त की हम किसीकी निंदा नहीं करते देवता की क्या बात है हम लोग शास्त्र रीत से कहने से तुम अपने अपने मन में निंदा मानते हो भगवन्मंत्र मोक्ष का हेतु है और मंत्र और और फल हेतु हैं जो तुम पूछा कि उसका मोक्ष नहीं होय तौ उसके शास्त्र की क्या गति है सो सब कहते हैं भगवन्मंत्र सरीखे वह मंत्र साक्षात् मोक्ष का हेतु नहीं है जैसे कुंड-धार नामा यक्ष की धनके वास्ते अपने का उपा सना करिकै धन पाइकै उस धनको थोडा मा-निकै उस धनके साथ देवसभा में जाइकै प्रार्थ-ना किया देवता लोग उनके ज्ञानोपदेश करिकै मोक्ष कराई यह बात भारत में लिखाहै ऐसेही और देवतन्ह के मंत्र जपेसे उपासना करेसे वह देवता प्रसन्न ह्वैकै मोक्षका अधिकारी बनाय देते हैं जिसमें नारायण के भजेते मुक्त हो जावै ।

॥७॥ प्रश्न–जिनके स्त्री नहीं है उनको दीक्षा देनेका अधिकार है कि नहीं (उत्तर) जैसे वैदिक यज्ञादि कर्म स्त्री पुरुष दूनों को अधिकार कहा है तैसे मंत्र दीक्षा देने में दूनों को नहीं अधिकार कहा है जैसे पोखरा खोदावना इत्यादि स्मार्त्त यज्ञ में स्त्री का काम नहीं है तैसे मंत्र देने में स्त्री का काम नहीं है यह बात सबके संमत है ॥ ८ ॥

आठतरह के चौथे प्रश्नका उत्तर दे चुके।

॥१॥प्रश्न–तुम्हारा आवश्यक धर्म क्या है जो हरिध्यानादि आवश्यक कहते हो तो संध्या गायत्री जपादिक तुम्हारे आवश्य नहीं हैं ऐसे जानवे में आवते हैं फेर वर्णाश्रम गनती तुम्हारे मतमें है कि नहीं (उत्तर) हमको आवश्यक हरिध्यान संध्या गायत्री जपादि सब हैं परन्तु

संध्या गायत्री जपादि जौन हैं सो न करने से प्रत्यवाय होता है सो नहीं होनेके वास्ते आवश्यक हैं सो संध्या गायत्री विना और कर्म करने का अधिकार भी नहीं है यही वास्ते आवश्यक है हरिध्यानादि जोहै सो मोक्षके वास्ते आवश्यक है जो दूनों का विरोध हो तौ एक आवश्यकभए दूसरा अनावश्यक होगा सोतौ है नहीं हरिध्यान और फलके वास्ते है संध्यादि और फलके वास्ते है अरु संध्यादि हरिध्यान का उपकारक भी है जो पूछा कि वर्णाश्रम गनती तुम्हारे संमत में है कि नहीं सो हमारे मतमें है नहीं कौन कहताहै संध्यादि अनावश्यक होने से वर्णाश्रम के गनती नहीं है यह तुम्हारा अभिप्राय समुझ परत है जो तुम्हारे मतके परमहंसन्हका संध्यादिकअनावश्यक होय तौभी वर्णाश्रम को गनती की संमति देखते हैं सो उन्हीं सों यह बात पूछो हम

सों क्या पूछत हो हमको वर्णाश्रम गनती अरु संध्यादि अरु हरिध्यान यह सबको आवश्यकहै॥

॥२॥प्रश्न–संध्यावंदन जो नहीं करते उसका अब्राह्मणत्व तुम्हारा संमत है कि नहीं (उत्तर) ब्राह्मण तुम किसको कहते हौ एक जाति से हैं एक संस्कार से हैं जो जाति से ब्राह्मण कहते हो तौ व्रतबंध से पहिले संध्या नहीं करता है तब जैसा ब्राह्मण हैं तैसे पीछे संध्या न करै तौ ब्राह्मणत्व कहां जायगा व्यक्तिके साथ जातिहै जो संस्कारै ब्राह्मणत्व कहते हौ तौ वह संस्कार थोड़े काल मो नष्ट होता है चाहै संध्या करै इससे क्या मतलब है जो कहो संस्कार से एक अदृष्ट होताहै सोई ब्राह्मणत्व है सो संध्या नहीं करनेसे नष्ट होताहै सो तुम्हारा संमत हैकि नहीं जो ऐसा पूछते हो तौ तुम्हारे मत सों संध्या न करने से अदृष्टनष्ट भया प्रायश्चित्त कियें से

फिर कहांसे आवैगा जो नष्ट भया उसका फिरि जन्म नहीं होता प्रायश्चित्तसे दूसरा अदृष्ट होता है कहोगे जात कर्मसे लेके उपनयन पर्यन्त संस्कारसे भया जो अदृष्ट सो प्रायश्चित्त सो कहा होगया यहीते तुम्हारा प्रश्न कुछ ठीक नहीं है जो यह पूछो ब्राह्मण का संध्या वंदन कौन कामकेहैं उसमें शास्त्रकारनका सिद्धांत कहतेहैं सुनो गुरु मतमें संध्यावंदन से पंडापूर्व फल होता है नैया यिकादिकन के मत मों संध्या नहीं करने सेप्रत्य- वाय होताहै और करनेसे नहीं होताहै हमारे मत मे संध्या नहीं करनेसे और कर्म करने की योग्यता मिटावनेवाला कुछ प्रत्यवाय होताहै ॥

॥ ३ ॥ प्रश्न–संध्यावंदन नहीं करनेसे जो भया पाप तिसका प्रायश्चित्त तुम्हारे मतमें है कि नहीं (उत्तर) हमारे मतमें क्या सबके मतमें प्रायश्चित्त है गुरुमतमें विहित कालमें पवित्र है

के संध्या न करै फेरि बिना प्रायश्चित्त संध्याकरै तौभी पंडापूर्व फल होतानहीं ताते प्रायश्चित्त चाही नैयायिक मतमें संध्या नहीं करने से जो प्रत्यवाय होता है उसके दूर करनेके वास्ते प्रायश्चित्त चाही हमारे मतमें संध्या नहीं करने से और कर्म करने की योग्यता मिटावने वाला जो पाप उसे दूर करने को प्रायश्चित्त चाही ताते सबके मतमें प्रायश्चित्त आवश्यक है ॥

॥४॥ प्रश्न–ग्रहस्थोंके पंचदेवता पूजन आवश्यक है कि नहीं (उत्तर) तुम क्या पूछत हो हमारे संप्रदायके गृहस्थों के कि और गृहस्थोंके जो हमारे संप्रदायिनके पूछो तो हमारे संप्रदाय के जो गृहस्थ वैष्णव दीक्षा लिये हैं और फलको छोडिकै मोक्षके वास्ते नारायण को भजन करनेवाले उनको और देवता सों क्या काम है ताते हमारे संप्रदायके गृहस्थ होय या न होय

तौ उन्हें पंच देवता का पूजन आवश्यक नहीं है हमारे संप्रदायवाले अनन्यदेव कहाते हैं एके का भरोसा राखत हैं और सबके नहीं राखते लोकमें भी यह बात है जो एके का भरोसा राखत है उसीका काम होता है और पंचका भरोसा राखनेसे कुछ नहीं होता जो और मतके गृहस्थन को पुछत हौ तौ जैसा शास्त्र में कहा है तैसा पूजन आवश्यक होगा॥

॥५॥ प्रश्न–बिना प्रार्थिव पूजे गृहस्थन को भोजन आवश्यक है कि नहीं (उत्तर) पहिले प्रश्न के उत्तरसे तौ इसका भी होगया तौ भी कहते हैं जो गृहस्थ शैव हैं तिनको विना पार्थिव पूजे भोजन करना उचित नहीं है हमारे संप्रदाय वालों के पार्थिव पूजासे कुछ मतलब नहीं है ॥

॥६॥ प्रश्न–बलिवैश्वदेवादि आवश्यकर्त्तव्य है कि नहीं (उत्तर) पंच महायज्ञ का जैसा अ-

धिकार शास्त्र में कहा है तैसा अधिकार होय तौ कर्त्तव्य है जो वैसा अधिकार न होय तौ नहीं कर्त्तव्यहै ॥

॥७॥प्रश्न–भगवान् का निवेदित जो वस्तु है उसके ग्रहण करनेको शास्त्र में विधिभी निषेध भी है तौ उसकी क्या गति है(उत्तर)विधि निषेध का वचन लिखने से ग्रंथ बहुत बढ़ि जाता है ताते थोडे में अर्थ कहते हैं जो निषेध है तिसमें निर्माल्य नैवेद्य नहीं ग्रहण करना येतनै है भगवान् का नाम नहीं है जो निर्माल्य नैवेद्य का ग्रहण करने को वचन है तिसमें भगवान् का नाम है हिंसा करना या त्यागमें हिंसा करना ऐसा शास्त्र कहैहै तिसका उत्सर्गापवाद न्याय के जैसी व्यवस्था शास्त्रकारने किया है तैसे ओही न्यायते भगवान् का निर्माल्य अरु उनका नैवेद्य ग्रहण करना देवतांतर का निर्माल्य नैवेद्य

ग्रहण नहीं करना अरु तुम्हारा निर्माल्य गंध पुष्प ग्रहण करिकै अरु तुम्हारे उच्छिष्ट भोजन करिकै तुम्हारे माया को जीतैंगे यह बात भागवत में कहा है और विष्णु का नैवेद्य और देवता को देना पित्रन को देना ऐसे भागवत के श्रीधरी टीका में प्रमाण लिखा है जो भगवान् का नैवेद्य और देवतन्ह को देना ठहरा तो अपने में क्या संदेह है जिसको भगवान् में भाव नहीं है तिसको भगवान् का नैवेद्य देना निषेध है यह बात ईश्वरसंहिता में लिखी है भारत अरु शौनक भरद्वाजादि स्मृतिन्ह में और श्रुति में भी विष्णु का निर्माल्य नैवेद्य ग्रहण करनेको लिखा है ताते भगवान्के निर्माल्य नैवेद्य ग्रहण करने की विधि है और देवतांतर का निर्माल्य नैवेद्य ग्रहण करने का निषेध है॥

॥८॥प्रश्न–देवतांतरका निवेदित वस्तु ग्राह्य है कि नहीं (उत्तर) ये प्रश्नका उत्तर ऊपरके प्रश्नके उत्तरमो लिखचुके हैं उसीसे जानलेना पचवां आठतरहके प्रश्नके उत्तर दे चुके ॥

॥९॥प्रश्न--तुम्हारे मतमें तिलक कैसा चाही (उत्तर) जो हम लोग करते हैं ऐसे चाही इसका प्रमाण अनेक ग्रंथन्हमें वशिष्ठ हारीत स्मृति इत्यादिक में लिखा है अरु अथर्वणादि वेदमें भी लिखा है अरु शतपथ ब्राह्मणमें भी लिखा है अरु जो तुम पूछे हो कौने द्रव्यका तिलक चाहि तौ ऊर्ध्व पुंड्र करनेको श्वेतमृत्तिका शास्त्रमें लिखा है सो प्रशस्त मोक्षदायक लिखा है जो पूछा भगवानका अरु लक्ष्मीजीका तिलक करनेका कैसा विधान है उसका (उत्तर) देते हैं भगवान लक्ष्मीजी शास्त्रके अधिकारी नहीं हैं

जैसी भक्तकी रुचिहोय चाहै मृत्तिका चाहै के-सर चाहै कस्तूरी चाहै सोनाकाकरै इसमें कुछ शास्त्र प्रमाण नहीं है ॥

॥२॥ प्रश्न–तुम्हारे शिष्योंकी अरु उनके स्त्रीन की समान रीति है अथवा विलक्षण रीति है (उत्तर) कुछ समान भी है कुछ विलक्षण भी है ॥

॥३॥ प्रश्न–और भिन्न भिन्न द्रव्यके भेदमें क्या प्रमाण है (उत्तर) हमारे मतमों एकै द्रव्य श्वेत मृत्तिकाके सिवाय और नहीं है शास्त्र में यही प्रशस्त मोक्षप्रद लिखा है जो भिन्न भिन्न द्रव्य सों तिलक करता है तिससे पूछो ओ यह जवाब देहिंगे हमारा क्या काम है ॥

॥४॥ प्रश्न–आकार भेदमें क्या प्रमाण है (उ-त्तर) हमारे संप्रदायके एकै आकारका तिलक है इसका प्रमाण वैष्णव धर्मशास्त्रमें लिखा है ॥

॥८॥प्रश्न—भारत औरमनु आदि शास्त्रन्ह अरु आचारादर्शाह्निक ग्रंथोमें तिलक विधान क्यों नहीं (उत्तर) इसका उत्तर पहिले कहि चुके कि मन्वादिक सामान्य धर्म कहनेमें प्रवृत्त हैं विशेष धर्म कहनेमों नहीं प्रवृत्त हैं भस्म रुद्राक्ष मालादि धारण मनुने जैसे नहीं कहा है तैसे यह भी नहीं कहाहै तिससे क्या अप्रमाण है जो कहो जो बात भारतमें है सोई अन्यत्र है जो भारतमें नहीं है सो अन्यत्र भी नहीं है ऐसे वचन हैं ताते तुम्हारे मत भारतमें न रहनेसे अन्यत्र कहूं नहीं है ताते अप्रमाण है उसका समाधान भारत शांति पर्वमें पंचरात्रकी बड़ी प्रशंसा करिके प्रामाण्य का स्थापन किया ओही पंचरात्र में इतना हमारा मत सब कहाहै ताते भारत में भी कहि चुके तो आचारादर्शादि आह्निक ग्रंथ में

नहीं कहा तौभी हमारे संप्रदायके आह्निक ग्रंथमें कहा है॥

॥ ६ ॥ प्रश्न–विजातीय तिलकके निंदा में क्या प्रमाण है (उत्तर) हम सवके तिलक की निंदा नहीं करते हैं अरु हमारे संप्रदायके जोहैं तिन्ह के येही तिलक है और तिलक की निंदाहै सो ऊर्ध्वपुंड्र सबको विहित है तुम्हारे मतवाले सब कोई करते हैं॥

॥ ७ ॥ प्रश्न–और तुम्हारे तिलकका अंगीकार नहीं करनेसे दोष होता है सो क्या प्रमाण है (उत्तर) संध्यावंदन अरु जप होम वेदपढना पितृके तर्पण श्राद्ध दान यज्ञ इत्यादि कर्मन में विशेष करिकै ऊर्ध्वपुंड्रका धारण करै शास्त्र में कहा है जो नहीं करे तौ दोष होताहै ताते हमारे वैष्णव संप्रदाय में आवश्यक

है और संप्रदायमें होय चाहै न होय करै या न करै हमारा क्या काम है ॥

॥ ८ ॥ प्रश्न–और उसके धारणसे पुण्य होता है इसमें क्या श्रुति प्रमाण है (उत्तर) ऊर्ध्वपुंड्र धारण करिके जो कर्म करता है उसपर भगवान् प्रसन्न ह्वैके फल देते हैं जो बिना ऊर्ध्व पुंड्रके कर्म करता है उसको राक्षस ले जाते हैं भगवान् नहीं ग्रहण करते हैं ऐसा वैष्णव धर्म-शास्त्रमें लिखा है आठ तरह का छठवाँ प्रश्नका उत्तर दे चुके ॥

॥ ९ ॥ प्रश्न–सर्व शास्त्र करिके संमत शिव विष्णु का अभेद तुम्हारे संमत है कि नहीं (उत्तर) हमारा संमत है सो अभेद कैसा है सो विचार करना चाही स्वरूप में अभेद क्या विशिष्टते अभेद शास्त्रमें अत्यन्त भिन्न करिके

प्रतिपादन करनेसे शिव विष्णुका स्वरूप तो अभेद नहीं बनता है अरु विशिष्ट ते अभेद बनसक्ता है सो अभेद शरीर शरीरी भाव करिकै होता है इस वात में बहुत कहना है जो कहै तो ग्रंथ बढिजाय सो इसके वास्ते बड़े बड़े ग्रंथ बने हैं चाहै तो देख लेवो और जो पूछो हौ कि अभेद संमत है तौ शिष्यन को उपदेश क्यों नहीं करते सो जैसा अभेद हमारा संमत है तैसा उपदेश भी करते हैं और जो तुम कहौ कि उलटे शिवपूजा का निषेध करते हौ सो उसका उत्तर कहिचुके फेर कहते हैं गीतामें भगवान् ने कहा है जो कोई दूसरे देवता का पूजा करता है सो हमारी पूजा करता है लेकिन् विधिपूर्वक नहीं करता है ऐसे भगवान्के निषेध किये से अरु उनको अल्पफल होता है मोक्ष नहीं होता है ऐसे भारतादिकमें कहनेसे भी

मुमुक्षुन्हका देवतांतरमें कुछ वास्ता नहीं तातें निषेध करते हैं जो मुमुक्षु न होय तो और फलके वास्ते और देवताकी पूजा करै हम निषेध नहीं करते हैं॥

॥ २ ॥ प्रश्न—जो भेद संमत होय शास्त्रोक्त दोष भागी होंगे (उत्तर) युक्ति सहित शास्त्रन्हते जौन अभेद सिद्ध होता है वह अभेदका विरुद्ध भेद हम कहते तो शास्त्रोक्त दोषभागी होते सो ऐसा हम नहीं कहते परंतु तुमहीं लोग शास्त्र विरुद्ध स्वरूपाभेद माननेवाले दोषभागी होगे॥

॥३॥प्रश्न—श्रीभावगत महाभारतादि ग्रंथोंके टीका करेवाले जे पूर्वाचार्य उन्होंने जो विरोध परिहार किया सो प्रमाण है कि नहीं(उत्तर) टीकाकार जे हैं ते अपने अपने संप्रदायके अनु- सार टीका किएहैं अपने मतके अनुसार विरोध-

परिहार किए हैं सो सबका संमत नहीं है हमारे मतवाले भी टीका किये हैं अपने मतके अनुसार विरोध परिहार किया है सो हमारा संमतहै जो एक संप्रदायवालेका टीका औरन्हको माननेको होय तो हमारे संप्रदायके टीका अरु और और संप्रदायकी टीका तुम क्यों नहीं मानते हो ताते टीकाकार अपने अपने मत अनुसार टीका करते हैं सो और संप्रदाय वाले क्यों मानेंगे ॥

॥४॥प्रश्न-जो प्रमाण होय तो तुम्हारे ग्रंथन-में क्यों विरोधता करिके वर्णन किया (उत्तर) हम प्रमाण मानते नहीं ताते विरोधता करि वर्णना किया ॥

॥ ५ ॥प्रश्न--जो प्रमाण होय तो टीकाकार विज्ञ थे कि अज्ञ थे ॥

॥६॥प्रश्न--जो विज्ञ थे तो उनका लिखना प्रमाण रूप है ॥

॥७॥प्रश्न जो अज्ञ थे तो तुमसब जगको विरुद्ध कहने वाले कौन हौ तुम्हारा क्या प्रमाण है यह सबका उत्तर जो जो और संप्रदायके टीका करनेवाले हैं अरु व्यासमूत्रके मध्वाचार्य याद- व नीलकंठ भास्करादिक टीका करनेवाले जे थे ते विज्ञ रहे कि अज्ञ रहे जो कहो विज्ञ तो उन का कहा तुम क्यों नहीं मानते जो कहो कि अज्ञ रहे तो तुम सब जगके विरुद्ध कहनेवाले कौन हौ तुम्हारे कहेका क्या प्रमाण है ऐसे प्र- श्नको जो तुम उत्तर देहुगे सोई उत्तर हमारा भी जानो॥

॥८॥प्रश्न–जो तेरा द्वेष करता है सो मेरा द्वेष करता है जो तेरे अनुसार चलता है सो मे- रे अनुसार चलता है हे जगन्नाथ! हे जगत्स्वा- मी! जो जो तेरी उपासना है सोई मेरी है ऐसे

जो विष्णु ने शिवसों कहा है उसकी क्या गति (उत्तर) लोकमें जिसका जो अत्यंतप्रिय होता है ओ दोनों परस्पर ऐसा कहते हैं जो तुम्हारा प्रिय है सो हमारा प्रिय है जो तुम्हारा द्वेषी है सो हमारा द्वेषीहै जो तुम्हारी भक्ति है सो हमारी है येही लोकके रीतिसों भगवान् शिवप्रिय हैं शिवको भगवान् अत्यंत प्रिय हैं ज्ञानी जो हैं सो हम ही हैं ऐसे कहनेवाले भगवान् ज्ञानिन्ह में श्रेष्ट शिव तिनके प्रति ऐसे कहने में क्या आश्चर्य है ऐसे वाक्य पांडवन प्रति भगवान्ने कहा है भारत में जैसे शिवका अरु विष्णु का अभेद तुम मानते हौ तैसे पांडवका अरु कृष्णका अभेद तौ तुम नहीं मानते हौ सो कृष्ण पांडव से ऐसे वचन कहा है तिसका जैसा अर्थ तुम करोगे सोई अर्थ

हमारा भी है अरु बहुत काल शिव तपश्चर्या किया है तब भगवान् प्रसन्न भए तब शिव वर मांगा कि सब लोग हमारी पूजा करैं सो करो तब भगवान ने कहा हम अवतार लेके पूजा करैंगे तो सब कोई पूजा करैंगे ऐसे कहि भगवान् अवतार लेके शिवके व्रत तपस्यादि करके बहुत तरहसे पूजा किया पुत्र मांगलिया ऐसे भक्तवत्सल भगवान् शिवसे ऐसे वचन कहने में क्या विरोध है ॥

आठ तरह के सातवां प्रश्नका उत्तर देचुके ।

प्रश्न—तुम्हारा आह्निक क्या है (उत्तर) जैसी वैदिक अस्तिकन की है तैसी जानो अरु ये पूछे कि पहिले संध्या वंदनादि किस श्रुति स्मृति से करते हो तिसका (उत्तर) जैसी गृह्य सूत्रकार कहा है तैसे करते हैं वैदिक कर्म यज्ञादि

कल्पसूत्र की रीतिसे करते हैं अरु देह शुद्ध्यादिक स्मृतिके रीतिसे करते हैं ॥

॥ २ ॥प्रश्न–और तुम्हारा विधानग्रंथ कैसा है (उत्तर) श्रौत कर्म में मीमांसा शास्त्र करिके निश्चित श्रुति है स्मार्तकर्ममें स्मृति है अरु आचरण क्रमके कहनेवाले कल्पसूत्र गृह्यसूत्र अरु वैदिक सार्वभौमादिकन के आह्निक ग्रंथ हैं ॥

॥ ३॥प्रश्न–इसमें गायत्री जपकी आवश्यकता है कि नहीं (उत्तर) जो वर्णाश्रम धर्म है सो वर्णाश्रम धर्मवाले का आवश्यक है हमारे संप्रदायके वैष्णवन्ह में गायत्री जप भी आवश्यक है वैष्णव धर्म भी आवश्यक है जो तीनो वर्ण से बाहर हमारे संप्रदायके वैष्णव हैं तिनको गायत्री जप आवश्यक नहीं है

उनको वैष्णव धर्म अरु अपने वर्ण के धर्म आवश्यक हैं ॥

॥४॥ प्रश्न--आवश्यक होय तो भस्म धारण रुद्राक्ष माला करिके जपकी आवश्यकताहै कि नहीं (उत्तर) गायत्री जप तो आवश्यक है परन्तु भस्म धारण आवश्यक नहीं है गायत्री जप कालमें भस्म धारण तो मन्वादिक नहीं कहा है अरु वैष्णव धर्मशास्त्र में मृत्तिका करिकै ऊर्ध्वपुंड्र धारण बहुत सा कहा है ताते ऊर्ध्वपुण्ड्र ही आवश्यक है ये बात पहिले कहि चुके हैं विश्वामित्र कल्पादिक गायत्री जप कालमें भस्मधारण जो कहाहै सो शैवन्ह के वास्ते है तुम्हारे मतवाले भी बहुत जने प्रातःकालके संध्याकाल में ऊर्ध्वपुण्ड्र धारण करते हैं तुम्हारा मत तुम नहीं जानते हौ जो पूछो कि रुद्राक्ष-

माला करिकै गायत्री जप आवश्यक है कि नहीं इससे हमैं जान पडताहै कि तुम कवही संध्या करवे नहीं किया काहेतें रुद्राक्ष तुलसी माला इत्यादिक करिकै गायत्री जप नहीं कहाहै अरु निषेध किया है अरु दक्षिण हाथ के पर्वन्ह सों गायत्री जप लिखा है यह बात पितामह भरद्वाज शंखादि वाक्यन्ह मों जानो जो पर्व में, जप करने को जिससे नहीं बनता होय उसके कुशमाला अरु पद्माक्ष माला करिके भी जप भरद्वाज लिखा है विश्वामित्रादि कल्प में कहूं रुद्राक्षमाला लिखा होय तो शैवन्ह को जानो सो भी हाथके पर्वन्ह से जप नहीं बनता होय तो ॥

॥ ९ ॥ प्रश्न—भगवान के पूजनकाल में कौन कौन पात्र प्रशस्त है (उत्तर) वैखानस-

पंचरात्रादिक में भगवानके पूजा प्रकरण में जौन जौन भगवान के पूजा योग्य पात्र लिखा है सो सो पात्र अपने आश्रमके अनुसार अरु धनके अनुसार प्रशस्त हैं॥

॥ ६ ॥ प्रश्न—और गंगाजल करिकै भगवा-को स्नान अच्छा है कि नहीं (उत्तर) गंगाजीको ब्रह्मद्रव करि के बहुत शास्त्र में बहुत माहात्म्य कहाहै ताते गंगाजल करि स्नान करावना अच्छा है॥

॥७॥ प्रश्न तुम्हारे संप्रदाय से रहित विद्यादि गुणवाले ब्राह्मण का देखा हुआ अन्न खाना चाहि कि नहीं (उत्तर) हमारे संप्रदाय से विरुद्ध आचारवाले जो पंडित होय चाहै अपंडित होय ब्राह्मण होय चाहै अब्राह्मण होय उनके साथ हमारे संप्रादाय में निष्ठावाले

को बैठना सोवना उनका देखा भोजन करना इत्यादि सब व्यवहार करनेका वैष्णव धर्मशास्त्र में बहुत निषेध कहा है ताते हम लोग नहीं खाते हैं ॥

॥८॥ प्रश्न–तुम्हारे संप्रदाय में स्थित संपूर्ण वर्णों का देखा हुआ अन्न खाते हैं कि नहीं (उत्तर) हमारे संप्रदायके वैष्णव को कोई का देखा हुआ अन्न न खाने का वचन नहीं मिला है तौभी सबका देखा अन्न नहीं खाते हैं काहेते ऐसे अनादि परंपरा चला आया है तिसको छोड़ना नहीं है ब्राह्मणके हाथ का अन्न न खाना ऐसे शास्त्र में तो नहीं कहा है तौभी तुम्हारे देश में ब्राह्मण का किया अन्न सब कोई नहीं खाते हैं तैसे अनादि परंपरा से चला आया है सब शिष्ट जिसको माने हैं सोभी धर्म

है धर्मज्ञ समय साधुन का आचार यह सब प्रमाण करिकै शास्त्र में कहा है भगवान के मंदिर में उनका देखा खाते हैं येभी आगे से चला आया है ॥

आठ तरह के आठवां प्रश्न के उत्तर देचुके ॥ ऐसे चौंसठ प्रश्न के उत्तर देखकै सो नहीं जानिकै वादी शंका जो किया उसका उत्तर देतेहैं वादीकी शंका तुमने जो अपने मतकी प्रशंसा करी सो यथार्थ नहीं क्योंकि जो श्रुतिस्मृति इतिहास पुराण महानुभाव शिष्ट संप्रदायकरिकै संमत लोकमें प्रचलित है उनमें तुम्हारा मत जो तप्तमुद्रादिधारण तिसका कहीं लेख भी नहीं मिलता (उत्तर) तुम्हारी शंका ठीक है तुम्हैं नहीं मिला काहे कि तुम लिखे हौ कि आजकाल वेदका पढना पढावना छूट

गया है जो वेदशास्त्र पढ़ते तौ मिलता पहिले पहिले लोग हमारे संप्रदाय के तुम्हारे संप्रदायके और सब संप्रदायके जो वेद शास्त्र पढे हैं उनको मिला है काहेसे जान पड़ता है कि हमारे आचार्य सुदर्शन मीमांसा चक्रोल्लास सच्चरित्र रक्षा परिकरविजयादिक ग्रंथ में कहा है तैसे रामार्चनचंद्रिका स्मृतिकौस्तुभ हरिभक्ति विलासादिक ग्रंथमें शंकराचार्य मध्वाचार्यादि संप्रदायवाले लिखा है तुम्हें संदेह होय तौ उसे देखलेना संदेह छूट जायगा (शंका) जो जो तुम अपने मतको प्रमाण देतेहो सो प्राचीन आचार्योंके संमत पुस्तकोंमें नहीं है (उत्तर) पद्मपुराण अग्निपुराण लिंगपुराण नृसिंहादिपुराणनको मँगायकै देखो अब मिलता है और सब पुराणकी जो जो संख्या

लिखी है सो सो मिलते नहीं तुम क्या देखोगे यहिते जो प्राचीन लोग कहि आये हैं तिनको प्रमाण जानो और आज कालके चलित जो ग्रंथहैं भारतादिक सो हमारे मतका जो धर्म रहा सो कोई वैष्णवद्रोही निकास डारे हैं इसीसे संख्या से घट गया है (शंका) संपूर्ण वेद अरु धर्मशास्त्रों में बडे परिश्रम से वर्णाश्रमही उपपादन किया है उस के आचरणकरनेवाले की प्रशंसा लिखी है अरु त्यागनेवाले की बड़ी निन्दा करी हैं जो यह श्रौत स्मार्त धर्म मुख्य नहीं होता तौ ऐसा नहीं लिखते (उत्तर) यह जो तुमने कहा हमारे मत से यह बात विरुद्ध नहीं है श्रौत स्मार्त्त धर्म मुख्य नहीं है यह बात हम तौ नहीं कहते जिसको जैसा अधिकार है उसको वैसा चाहिये

(शंका) जो आचारही करिके ब्राह्मण होसक्ता तौ ऐसा शास्त्र में क्यों लिखते ब्राह्मणहीको इन कर्मोंका अधिकार है शूद्रको नहीं है शूद्र करै तौ पाप होता है (उत्तर) ये जो तुमने पूछा इससे जानपड़ता है आचार करिकै ब्राह्मण होना तुम्हारा संमत नहीं है ऐसा होय तौ उस शास्त्रका क्या अर्थ करोगे तातें आचार करिकै अरु संस्कार करिकै अरु कोई प्रकार करिकै ब्राह्मण होइ तो उसीको अधिकार है शूद्रको नहीं है यामें क्या विरोध है (शंका) व्यास वसिष्ठादि योगीश्वर थे उनका दृष्टांत सब मनुष्यन्हको नहीं हो सकता है (उत्तर) यह जो तुमने कहा सो हमभी उनका दृष्टांत सब मनुष्यन्ह को नहीं देते हैं उनके सरीखे जो योगीश्वर रहे उन्हींको उनका दृष्टांत देते हैं

(शंका) विष्णु ने शिव की भक्ति करी शिव प्रसन्न ह्वैके विष्णु को ऐश्वर्य दिया विष्णुने शिवकी महिमा को पार न पाया ऐसी शिवकी बड़ाई शास्त्रन में कहा है (उत्तर) यह जो तुमने कहा वह बात ऐसी है कि विष्णुने प्रसन्न ह्वै के शिव को वर दिया कि हम तुम्हारी भक्ति करेंगे पूजा करेंगे तुम्हारी बड़ाई जगतमें फैलावैंगे जिसमें सब कोई तुम्हारी पूजा करै याते विष्णु अपना आचरण करिकै शिवकी बडाई जगत् में फैला दियाहै इसमें क्या विरोध है नारायण भक्त वत्सल हैं (शंका) यह वेदने कहा है कि सृष्टि के आदि में केवल शिवही रहे उन्हींने सब जगत्को पैदाकिया (उत्तर) यह जो तुमने कहा सो सत्य है ऐसा वेद में औरभी कहाहै सृष्टिके आदिमें सत्य ही रहा असत्य ही रहा ब्रह्मही रहा आत्माही रहा नारा-

यणही रहा ओही सब जगत् को निर्माण किया उसका क्या अर्थ करोगे जगत्के अनेक कारण नहीं होते हैं एकही होता है ताते सत आदि शब्दन्ह ते जैसा नारायण अर्थ है तैसा शिवशब्द का भी कल्याण रूपता करिकै नारायणै अर्थ है नारायण शब्दका शिव अर्थ क्यों न होय जो ऐसा कहोगे यह बात तुम्हारे मतके बड़े बड़े पहिले लोगन्ह से भी न बना तौ तुमसे अब क्या बनैगी (शंका) जो तुमने कहा कि विष्णु की प्रीतिसों मुक्ति होती है गायत्री जपादिसे नहीं है ऐसा वेदमें नहीं है ब्रह्म गायत्रीजपादि करिकै चित्त शुद्धि द्वारा केवल ज्ञानही से मुक्ति होती है (उत्तर) ऐसा जो तुमने कहा सो शास्त्रकी मर्यादा जानिकै नहीं कहा काहेते कि शास्त्रमें

ऐसा कहा है केवल कर्मही फल नहीं देताहै कर्म से प्रसन्न ह्वै कै देवता फल देते हैं गायत्री जपादि कर्म करेते उसके अर्थ जो नारायण देवता सो प्रसन्न ह्वैकै चित्तशुद्धि भी देते हैं ज्ञान भी देते हैं जो कहो कि ज्ञान सों मुक्ति होती है सो सत्य है परन्तु वह ज्ञान कैसा है उसका विषय है ऐसा सब शास्त्रन को मिलाय कै विचार करे तो ऐसे ठहरता है भक्तिरूप समानाकार ज्ञानहै मिथ्या रूप संसार छूटने को भक्तिसे कौन काम जैसे मिथ्या सर्पकी निवृत्ति ज्ञान मात्रै ते होताहै तैसे मिथ्या संसार का निवृत्ति ज्ञान मात्र ते है ये मतका खण्डन भाष्यादिक में किया है सो देखिलेवो वह भक्ति रूप ज्ञानका विषय नारायण है शिवने अपने जबानीते कहा कि मोक्ष देनेका हमारा अख्तियार नहीं है सो अख्तियार नारायण का है

हम उसका रस्ता बतावने वाले हैं ताते नारायणै की भक्ति उनकी प्रीति द्वारा मोक्षका कारणहै ताते विष्णु की प्रीति से मोक्ष होता है सो सत्य है वैष्णव मतमें ह्वैके विष्णुकी भक्ति करै तौ नारायण को अधिकप्रीति होती है ताते वैष्णव ह्वैके विष्णुकी उपासना करना वैदिकन्हका सिद्धांत है येही ते हम लोग ऐसा करते हैं हम लोगन्हकी जो निंदा करता है सो उचित है काहे ते कि कोई बडे की बड़ाई देख कर छोटे लोग नहीं सहिसकते परन्तु यह बड़ाई नहीं मिटाय सकते हैं और निंदा करते हैं हम लोग किसी की निंदा नहीं करते हैं जो हमारी निंदा करता है उसको उपकार मानते हैं काहेते हमारा पाप सब लेता है येही बात शास्त्र में कहाहै निंदा करनेवाला जिसकी निंदा करता है उसके पापका भागी होता है ताते

जिसको मोक्षमें रुचिहोय उसको येही वैष्णव संप्रदाय ग्रहण करना उचित है॥

संमतोयम्॥

१ सम्मतिरत्रार्थे भट्टसखारामशर्मणः।
२ स० राजारामशास्त्रिणः।
३ स० गंगाधरशास्त्रिणः।
४ स० रानडोपाह्वबालशास्त्रिणः।
५ स० बालकृष्णशर्मणः।
६ स० विठ्ठलशास्त्रिणः।
७ स० रक्षपालशर्मणः।
८ स० बुद्धिनाथशर्मणः।
९ स० अधमशर्मणः।
१० स० देवोपाह्वशर्मणः।
११ स० श्रीरघुनाथशर्मणः।
१२ स० पश्चापशर्मणः।
१३ स० देवोपाह्वगोविंदशर्मणः।

१४ स० श्रीकुतीरीशर्मणः ।
१५ स० गोपालदत्तशुक्लस्य ।
१६ स० देवकीनंदनशर्मणः ।
१७ स० गोविंददत्तशर्मणः ।
१८ स० अनंतरामशर्मणःभट्टस्य ।
१९ स० कमलाकान्तशर्मणः ।
२० स० नवीननारायणशर्मणः ।
२१ स० श्रीकुलचंद्रशर्मणः ।
२२ स० श्रीमदनमोहनदेवशर्मणः ।
२३ स० श्रीरामकुलालदेवशर्मणः ।
२४ स० श्रीशंभुचंद्रदेवशर्मणः ।
२५ स० श्रीकालीकुमारदेवशर्मणः ।
२६ स० श्रीकेदारनाथदेवशर्मणः ।
२७ स० श्रीचंडीचरणदेवशर्मणः ।
२८ स० श्रीआनन्दचंद्रदेवशर्मणः ।
२९ स० श्रीमातंगोपदवाणीशर्मणः ।

३० स० श्रीशिवनाथदेवशर्मणः ।
३१ स० अमृतशर्मणः ।
३२ स० ओझोपनामकश्रीचंचलशर्मणः।
३३ स० श्रीवत्सजनमिश्रस्य ।
३४ स० श्रीआदिनाथशर्मणः ।
३५ स० अंबिकादत्तशर्मणः ।
३६ स० नंदरामशर्मणः ।
३७ स० शिवसहायशर्मणः ।
३८ स० रामकृष्णवेदांतिनः ।
३९ स० उमाशङ्करशर्मणः ।
४० स० सीतारामशास्त्रिणः ।
४१ स० विश्वनाथशर्मणः ।
४२ स० रामदत्तशर्मणः ।
४३ स० गुलजारदत्तशर्मणः ।
४४ स० गोविंदव्यासस्य ।
४५ स० छोटूमिश्रस्य ।

४६ स० बदर्याचार्यस्य ।
४७ स० रामसुखशर्मणः ।
४८ स० चेतरामशर्मणः ।
४९ स० नाथूरामशर्मणः ।
५० स० बालकृष्णशास्त्रिणः ।
५१ स० नंदरामस्य ।
५२ स० छोटेलालस्य ।
५३ स० रामरत्नाभिधस्य ।
५४ स० कालिदत्तशर्मणः ।
५५ स० कान्हचंदशर्मणः ।
५६ स० शिवप्रसादशर्मणः ।
५७ स० प्रतापरामशर्मणः ।
५८ स० रामकृष्णशर्मणः ।
५९ स० विष्णुदत्तनामकस्य ।
६० स० रामदत्तव्यासस्य ।
६१ स० सीतारामशर्मणः ।

६२ स० नारायणदत्तशास्त्रिणः ।
६३ स० मधुसूदनशर्मणः ।
६४ स० बाबूरामद्विवेदिनः ।
६५ स० नारायणदत्तशर्मणः ।
६६ स० यतिरामशर्मणोत्रपत्रे ।
६७ स० नारायणदत्तशर्मणः ।
६८ स० रघुनंदनशर्मणः ।
६९ स० देवीदयालशर्मणः ।
७० स० ठकुरोपनामकश्रीटीकानाथशर्मणः
७१ स० ओझोपनामकश्रीनिधिनाथशर्मणः
७२ स० ओझोपनामकश्रीदल्लिशर्मणः ।
७३ स० श्रीरामलालशर्मणः ।
७४ स० श्रीश्रीपालशर्मणः ।
७५ स० ओझोपनामकश्रीअमृतलालशर्मण
७६ स० गोपाललालशर्मणः ।
७७ स० श्रीछमकलाल शर्मणः ।

७८ स० श्रीकहुकीशर्मणः ।
७९ स० श्रीबाचूलालशर्मणः ।
८० स० श्रीराधेकृष्णशर्मणः ।
८१ स० श्रीरघुनाथशर्मणः ।
८२ स० श्रीगिरिधारिशर्मणः ।
८३ स० श्रीगोपालशर्मणः ।
८४ स० श्रीकिर्तिनाथशर्मणः ।
८५ स० श्रीमथुरानाथशर्मणः ।
८६ स० वत्साशर्मणः ।
८७ स० वत्सशर्मणः ।
८८ स० विद्यादत्तशर्मणः ।
८९ स० श्रीरामशङ्करशर्मणः ।
९० स० श्रीकालीप्रसाद शर्मणः ।
९१ स० चंद्रशेखरशर्मणः ।
९२ स० बस्तीरामशर्मणः ।
९३ स० हीरानंदशर्मणः ।

९४ स० जयदेवशर्मणः ।
९५ स० भाईरामशर्मणः ।
९६ स० गंगाधरशर्मणः ।
९७ स० शंभुशर्मणः ।
९८ स० शिवप्रसादशर्मणः ।
९९ स० मिश्रोपनामकघनश्यामशर्मणः ।
१०० स० हरदत्तशर्मणः ।
१०१ स० भैरवदत्तशर्मणः ।
१०२ स० मिश्रोपाह्वबलदेवशर्मणः ।
१०३ स० सीतारामशर्मणः ।
१०४ स० अम्बिकादत्तशर्मणः ।
१०५ स० पांड्येयोदाह्वजानकीप्रसादशर्मणः ।
१०६ स० गुलाबमिश्रस्य ।
१०७ स० जमैयतरामशर्मणः ।
१०८ स० शीतलप्रसादशर्मणः ।
१०९ स० गुरुमूर्तिशास्त्रिणः ।

११० स० बेचनरामशर्मणः ।
१११ स० वाचस्पतिशास्त्रिणः ।
११२ स० बाबूभट्टशर्मणः ।
११३ स० पाडबोलोपाह्वबाबूशर्मणः ।
११४ स० लक्ष्मणज्योतिर्विच्छर्मणः ।
११५ स० ज्योतिर्विदःसेवारामशर्मणः ।
११६ स० रामबकसज्योतिर्विच्छर्मणः ।
११७ स० शीतलमिश्रस्य ।
११८ स० ठाकुरदत्तशर्मणः ।
११९ स० मोहकमरामशर्मणः ।
१२० स० शिवचरणशर्मणः ।
१२१ स० रामसेवकशर्मणः ।
१२२ स० मिश्रहरचंद्रशर्मणः ।
१२३ स० देवराजशर्मणः ।
१२४ स० देवीचंदशर्मणः ।
१२५ स० श्रीरामशास्त्रिणः ।

१२६ स० फतेरामशर्मणः ।
१२७ स० रामप्रसादब्रह्मचारिणः ।
१२८ स० काशीनाथशास्त्रिणः ।
१२९ स० पंडितलायकरामस्य ।
१३० स० सुखलालमिश्रस्य ।
१३१ स० दुर्गादत्तस्य ।
१३२ स० तिवेघरामशर्मणः ।
१३३ स० सदानंदशर्मणः ।
१३४ स० गौरीशंकरशर्मणः ।
१३५ स० भट्टोपनामककमलाकरशर्मणः ।
१३६ स० लक्ष्मणभट्टस्य ।
१३७ स० यदुवीरदत्तस्य ।
१३८ स० संकटाप्रसादद्विवेदिनः ।
१३९ स० कन्नेलथीनारायणस्य ।
१४० स० शालिग्रामशर्मणः ।
१४१ स० बालकृष्णशर्मणः ।
१४२ स० भूदेवशर्मणः ।

१४३ स० पद्मनाभशर्मणः।
१४४ स० गंगेशशर्मणः।
१४५ स० गंगारामशर्मणः।
१४६ स० हरगोपालनाम्नः।
१४७ स० चंदूलालशर्मणः।
१४८ स० कालीचरणशर्मणः।
१४९ स० अमीचंदशर्मणः।
१५० स० गोकुलप्रसादद्विवेदिनः।
१५१ स० रघुनन्दनशर्मणः।
१५२ स० देवीदयालशर्मणः।
१५३ स० रघुनंदस्य।

एवं सर्वेषां पण्डितानां हस्ताक्षराणिन मुद्रितानिविस्त-
रभियाप्रधानपण्डितानां संमतिरेवमुद्रिता॥

इति दुर्जनकारिपञ्चानन समाप्त।

पुस्तक मिलनेका ठिकाना—
खेमराज श्रीकृष्णदास,
"श्रीवेङ्कटेश्वर" स्टीम् प्रेस—बंबई.

क्रय्य पुस्तकें।

(रामानुजसांप्रदायिकग्रंथाः ।)

नाम.	की. रु. आ.
आल्वारचारितामृत—पं० सुदर्शनदासानुवादित इस ग्रंथमें श्रीशिरोमणिस्वामीसे लेकर श्रीरामानुजस्वामी पर्यंत बारह श्रीसंप्रदायके आल्वारोंका चारितहै	०—८
विषयवाक्यदीपिका—श्रीरंगरामानुजमुनिप्रणीत टिप्पणी समेत अर्थात विशिष्टाद्वैतसिद्धान्त श्रीभाष्योदाहृतोपनिषद्वाक्यविवरणम्	२—०
स्तोत्ररत्नावली—रामानुजसांप्रदायिक प्रथमभाग....	१—४
"द्वितीयभाग १।)" तृतीयभाग	१—४

नाम. की. रु. आ.

त्त्वार्थ सुदर्शनी टीका (भाषा भाष्य) सहित पं० सुदर्शनाचार्य शास्त्रिप्रणीत ... २–८

मुकुन्दमालास्तोत्र ०–१

कुदृष्टिध्वान्तमार्त्तंड–(श्रीमत्स्वामीरंगाचार्यजीप्रणीत) ०–६

आळवंदारस्तोत्र मूल १) तथा भाषाटीकासमेत ०–४

श्रीवैष्णवधर्मशिक्षा–अर्थात् (श्रीरामानुजस्वामीके बहत्तर वाक्यभाषा) श्रीतोताद्रियतीन्द्रचरणनलिनाश्रित श्रीगौतमीतटस्थ साँयखेडा–दिव्यदेशाधिष्ठित श्रीबलभद्र रामानुजदासने निर्माण किया ०–२

भूतपुरीमाहात्म्य.... ... ... ०–४

वज्रकुठार–रामानुजसांप्रदायी ०–४

श्रीरामानंद जन्मोत्सव–भाषाटीका चारों

नाम.	की. रु. आ.
निगमांतार्थदीपिका—संस्कृत और भाषा-टीका....	०—१०
ब्रह्मोत्सव—आनंदनिधि दोहावलीसहित जिसमें श्रीवृन्दावनके श्रीरंगजीके मंदिरके सब उत्सवोंका वर्णन चित्रसहित है....	०—८
वैष्णवधर्मरत्नाकर—भाषाटीका समेत	२—८
अर्चावतार स्थलवैभवदर्पण—अर्थात् सब देशोंके क्षेत्र तीर्थोंका संग्रह	१—४
रहस्यत्रय—भाषाटीका	०—३
पंचस्तवी—(श्रीस्तवः, वैकुण्ठस्तवः, अतिमानुषस्तवः, सुन्दरबाहुस्तवः वरदराजस्तवश्चेति)	०—४
प्रपन्नामृत—मूल संस्कृत इस ग्रन्थमें दिव्यसूरियोंका जीवनचारित्र तथा रामानुजस्वामीका दिग्विजय तथा जीवनचारित्र विस्तार-	